जुएं, कपड़े और आधुनिक मानव

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने
'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है।
इस आंदोलन का मकसद आम जनता में
पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

जुएं, कपड़े और आधुनिक मानव	***Juyen Kapde Aur Adhunik Manav***
टी.वी. वेंकटेस्वरन	**T. V. Venkateswaran**
हिंदी अनुवाद	***Hindi Translation***
शेफाली श्रीवास्तव	**Shefali Srivastava**
पुस्तकमाला संपादक	***Series Editor***
तापोश चक्रवर्ती	**Taposh Chakravorty**
कॉपी संपादक	***Copy Editor***
अनूप चौधरी	**Anoop Chaudhary**
रेखांकन	***Illustration***
जेम्स एस. एडवर्डस	**James S. Edwards**
कवर एवं ग्राफिक्स	***Cover and Graphics***
जगमोहन	**Jagmohan**
प्रथम संस्करण	***First Edition***
अक्टूबर, 2007	**October, 2007**
सहयोग राशि	***Contribution***
20 रुपये	**Rs. 20**
मुद्रण	***Printing***
सन शाइन ऑफसेट	**Sun Shine Offset**
नई दिल्ली - 110 018	**New Delhi - 110 018**

Publication and Distribution

© Bharat Gyan Vigyan Samiti

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110 017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
website: www. bgvs.org

BGVS OCTOBER 2007 2K 2000 NJVA 0072/2007

हम लेखकों के विचारों की स्वतंत्रता में विश्वास करते हैं, सहमति/असहमति अलग बात है।

जुएं, कपड़े और आधुनिक मानव

टी.वी. वेंकटेस्वरन

जुएं, कपड़े और आधुनिक मानव

यदि हममें से किसी और के साथ ऐसा हुआ होता तो हम या तो शर्म से लाल या गुस्से से आगबबूला हो गए होते। भला कौन अभिभावक चाहेगा कि एक स्कूल टीचर उनसे यह कहे कि उनके बच्चे के सिर में जुंए हैं? मार्क स्टोनकिंग को भी एक दिन अपने बच्चे के स्कूल से एक पर्चा मिला जिस पर लिखा था कि वे अपने बच्चे के सिर से जुंए बिनवाएं। उनकी जगह कोई और अभिभावक होता तो इस बात पर बौखला उठता। लेकिन स्टोनकिंग इन छोटे-छोटे जंतुओं के प्रति आकर्षित व मंत्रमुग्ध हो गए।

खैर! मार्क स्टोनकिंग मानव के साथ-साथ एक मानव वैज्ञानिक भी थे। जुंओं के प्रति आकर्षित होकर इन छोटे-छोटे जीवों के

विषय में वे जितना पढ़ पाए, उन्होंने पढ़ा। उन्होंने पाया कि जुएं दो प्रकार की होती हैं- सिर की और शरीर की। सिर की जुएं सिर की खाल में पलती हैं जबकि शरीर की जुएं शरीर की खाल पर पलती है पर रहते हैं कपड़ों की सिलवटों में। न तो सिर की जुएं कपड़ों में रह सकती हैं और न ही कपड़ों की जुएं सिर में।

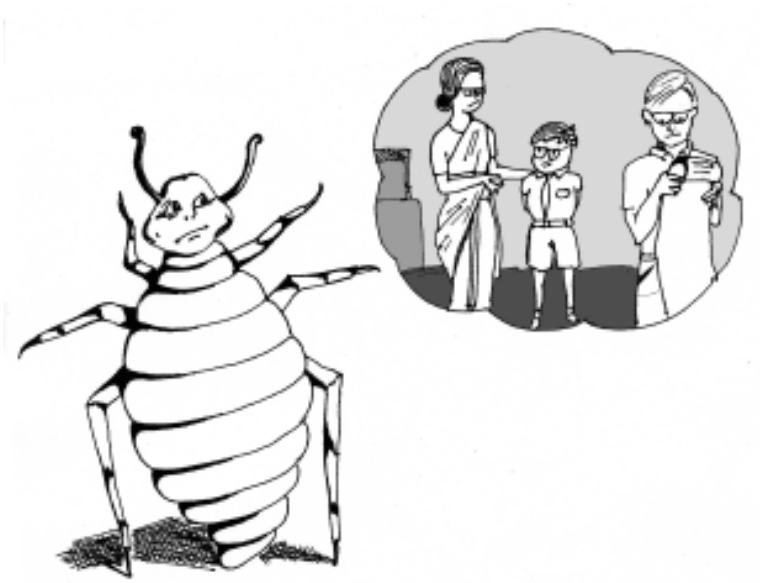

इस बात ने स्टोनकिंग को आश्चर्यचकित व गहन चिंतन के लिए विवश कर दिया। लेपज़िग, जर्मनी के मैक्स प्लैंक क्रमविकास व मानवविज्ञान संस्थान में उन्होंने अपने साथियों के साथ जुंओं की इन दो प्रजातियों की उत्पत्ति का अध्ययन किया। यह बात साफ थी कि इस अध्ययन से वे इतिहास के एक पुराने रहस्य से पर्दा उठा सकते थे। जैसे कि कपड़ों का अविष्कार कब हुआ? उसका आधुनिक मानव के देशांतर गमन (माइग्रेशन) पर क्या प्रभाव पड़ा? और वस्त्र विज्ञान का आधुनिक मानव की प्राचीन मानव के ऊपर विजय में क्या योगदान रहा?

वस्त्रों का रहस्य

अमीर अमरीकी महिलाओं के ऐश्वर्य से परेशान होकर मशहूर लेखक विलियम एलेन बटलर ने "नथिंग टू वियर" में लिखा : "नाश्ते, खाने व नाच के लिए कपड़े। बैठने, खड़े रहने और चलने के लिए कपड़े। नाचने व बात करने के लिए कपड़े। कुछ न करने के लिए कपड़े। सर्दी, गर्मी, बंसत व पतझड़ के लिए कपड़े। उफ्फ!

हर कोई एक नए रंग व रूप में। सूती, रेश्मी, मलमली, मखमली, जालीदार, जरीदार विभिन्न प्रकारों में। हर कोई एक से एक खूबसूरत और एक से एक महंगी।"

इसके विपरीत आजकल का फैशन है कम से कम कपड़े पहनना। यह फैशन आजकल का हो सकता है लेकिन समाज में भव्य वस्त्र उच्च कुल व सम्पन्नता की पहचान हुआ करते थे। कपड़े पहनना एक खासतौर पर मानवीय क्रिया है। कोई भी जानवर आजतक कपड़े पहनता हुआ नहीं पाया गया है। न तो खुद को मौसम से बचाने के लिए और न ही शालीनता के तौर पर। अब हम कम कपड़ों में इसलिए रह सकते हैं क्योंकि हम अपने वातावरण के तापमान को नियंत्रित रख सकते है। लेकिन यह पहले मुमकिन नहीं

था। कपड़े मुख्यतौर पर मानव के कम बालों वाले कोमल शरीर को खराब मौसम और वातावरण के अन्य प्रकोपों से बचाते हैं।

लेकिन लोग खराब मौसम ही नहीं बल्कि सामाजिक कारणों की वजह से भी वस्त्र पहनते हैं। पारंपरिक वस्त्र, सेनानियों की पोशाक, प्रचलित वस्त्र, सभी की सामाजिक महत्ता है। अगर पुराना समय एक विधवा को मुलायम मखमली वस्त्र त्याग कर खुरदरे खद्दर अपनाने को मजबूर करता था तो आज का आधुनिक समय भी हमसे मौके के मुताबिक ही कपड़े पहनने की उम्मीद रखता है।

लेकिन कपड़े आखिर हैं कितने पुराने? हम मनुष्य के खुद को ढकने के प्रयास को इतिहास में कहां तक समझ सकते हैं? नग्न शरीर को ढकने के लिए कौन-कौन-सी चीजों

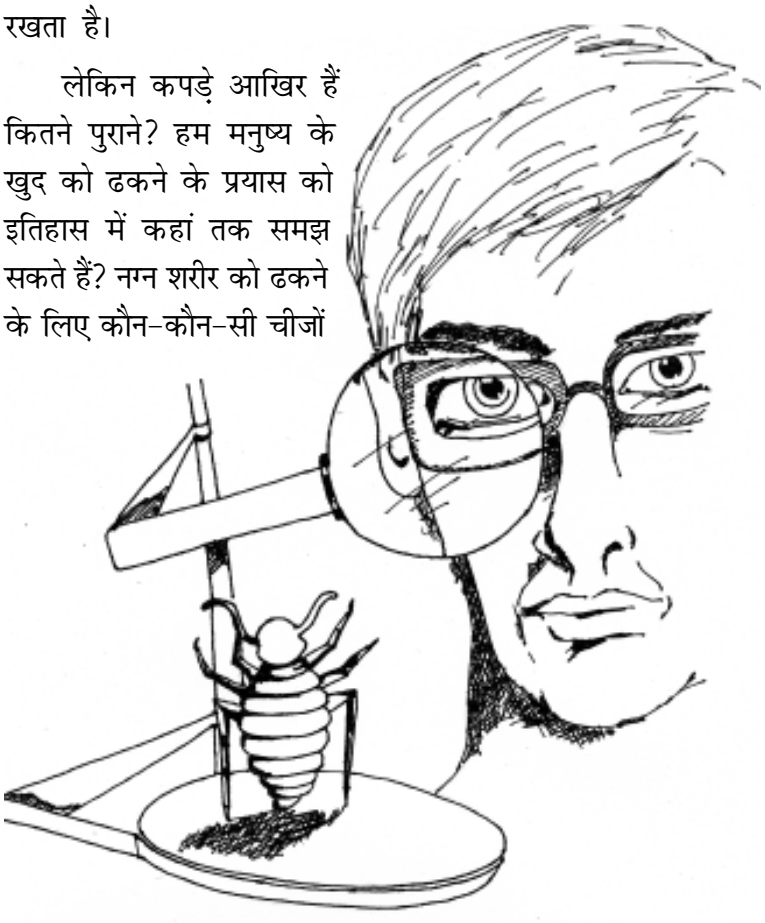

का इस्तेमाल होता है? पुरातत्व व मानव वैज्ञानिकों के अनुसार फर, चमड़ा, पत्तियां व घास हमारे सबसे पुराने वस्त्रों में से हैं। कपड़ों की खोज के शुरूआती दिनों में शायद प्राज्ञऐतिहासिक मानव वनस्पति के रेशे और सर्दियों में जानवरों की खाल के कपड़े पहनते थे।

हासलैबयोच, उत्तरी इटली में 1991 में, हिममानव की खोज से पहले नवपाषण कालीन वस्त्र एक कल्पना मात्र थे। उससे पहले केवल दो ही ऐसी चमड़े की चीजों के विषय में जानकारी थी– एक तो चमड़े की म्यान और फर का शॉल।

5000 सालों से भी ज्यादा समय तक बर्फ में दबे हुए हिम मानव के पास विभिन्न प्रकार की जानवरों की खाल व चमड़े पाए गए। उसके सामान में सात प्रकार के वस्त्र व 200 प्रकार के साज–सज्जा के अन्य सामान पाए गए। 8 विभिन्न प्रजातियों के जानवरों की खालें व अन्य पशु उत्पाद उसके वस्त्रों व उपकरणों में

मिले। कमरपेटी एक मुख्य वस्त्र था, जिससे कि शरीर के निचले हिस्से के वस्त्र बांधे जाते थे।

हिममानव हिरण की खाल की अलग-अलग रंग की पट्टियों वाला कोट पहनता था। यह शायद बिना बांह का होता था। बांस और घास की बुनी हुई बंडी शायद एक बाहरी वस्त्र था, जो कि आल्प्स के पहाड़ों में 20 वीं सदी की शुरूआत तक इस्तेमाल होती थी। फर की बनी तिकोनी टोपी ठोडी के नीचे से बांधी जाती थी। बछड़े की खाल के बने जूते, जिनके अंदर घास भरी होती थी, फीते से बांधकर पहने जाते थे। आरनॉल्ड अनुसंधान गुफा, मिसूरी से प्राप्त एक 7500 वर्ष पुराना जूता, प्राज्ञऐतिहासिक काल में पशुओं की खाल के इस्तेमाल की ओर संकेत करता है। लेकिन यह सब हमें सिर्फ 10000 वर्ष तक पीछे ले जाता है!

हड्डियों की तरह कपड़े जीवाश्म (फॉसिल) नहीं बनते, इसलिए

कपड़ों का इतिहास जानने के लिए हमें अनुमानित प्रमाणों की आवश्यकता होती है। पुरापाषाण काल के पुरातत्व शोध द्वारा धागे, रेशे आदि जैसी नष्ट होने वाली वस्तुओं (जाल, रस्सी, झोले, कपड़े) के विषय में जानकारी मिली है। वास्तव में महीन जाल की तरह के निशान और सम्भवत: सिर पर पहनने वाले कवच के निशान रूस की स्खोदन्या नदी के किनारे पर साखरोव द्वारा पाए गए हैं जो नवपाषाण काल के हैं। चेक रिपब्लिक में 27000 साल पुरानी जगह डोल्नी वेस्टोनिस से मिली हस्तशिल्पकृति घर में बने जाल के होने की ओर संकेत करती है, जो छोटे-मोटे शिकार करने में इस्तेमाल होते थे। सौफर और उनकी साथियों ने उस जगह मिट्टी

के बर्तनों पर भी बुने कपड़ों के निशान पाए। इसी प्रकार इस जगह के आसपास अन्य खोजों से हमें बुनाई के सबसे प्राचीन उदाहरण मिलते हैं। डोटनी वेस्टोनिस में मिले 43 मिट्टी के टुकड़ों पर टोकरी, व कपड़ों के निशान मिलते हैं। कुछ छाप तो आधुनिक लिनेन जैसे दिखते हैं। रस्सियों, धागों के कई छापों पर जुलाहे की गांठों के निशान भी पाए गए हैं। यह उनके द्वारा इस्तेमाल की गई एक तकनीक का सबूत है।

अफरीका

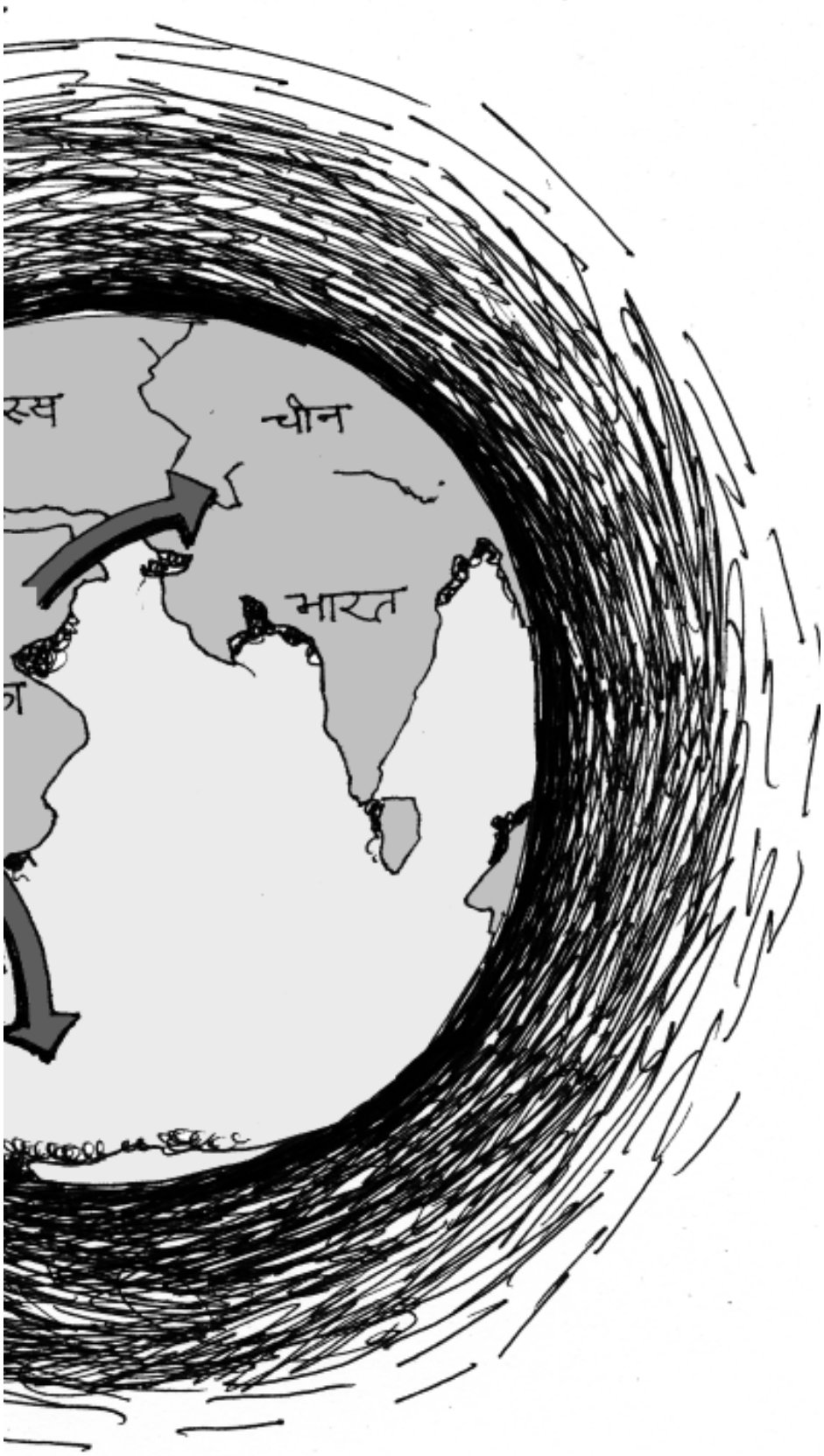
स
चीन
भारत

वस्त्रों की सामग्री समय के साथ नष्ट हो जाती है जैसे कि कपड़ा, जानवर की खाल चमड़ा इत्यादि। हर जीव पदार्थ की तरह प्राज्ञऐतिहासिक चमड़े व खालें भी बहुत ही अलग व खास तरीके के वातावरण में ही सुरक्षित रखी जा सकती हैं। यह हड्डी, पत्थर, धातु के समान ज्यादा दिन तक सुरक्षित नहीं रह पाते। इसलिए प्राज्ञऐतिहासिक खोज वस्त्रों के पूरे इतिहास को समझने के लिए काफी नहीं है। हालांकि वस्तु व मिट्टी के निशानों जैसे सीधे प्रमाण बहुत कम हैं लेकिन पुरातत्व खोजों के दौरान कई अप्रत्यक्ष प्रमाण भी पाए गए हैं। उदाहरण के तौर पर पुरातत्व वैज्ञानिकों ने 32000 वर्ष पुरानी हाथीदांत व हड्डियों की सुइयों को 1988 में कोस्टेंकी, रूस में खोज निकाला।

इससे यह साबित होता है कि वस्त्र और उनकी सिलाई आधुनिक मानव को 40000 वर्षों से ज्ञात है। पर क्या यह कपड़ों की पूरी कहानी है?

सिर व शरीर की जुएं

सिर की जुएं व कपड़ों में रहने वाली जुएं दो अलग-अलग प्रजातियां हैं, लेकिन ये एक-दूसरे से संबंधित जरूर हैं।

जुएं मानव शरीर से दूर रह कर कुछ घंटे या ज्यादा से ज्यादा कुछ दिन ही जीवित रह सकती हैं। चूंकि जुएं मानव शरीर के कुछ खास हिस्सों में ही रहती हैं इसलिए जुओं के क्रमविकास के इतिहास द्वारा मानव के क्रमविकास के विषय में भी जानकारी प्राप्त हो सकती है।

सिर की जुएं व कपड़ों की जुओं के बीच विभिन्नता शायद तब आई जब मनुष्य ने वस्त्रों का प्रयोग नियमित रूप से करना शुरू कर दिया। यह मानव के विकास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। हालांकि इसका कोई सीधा पुरातात्त्विक प्रमाण नहीं है। इसलिए स्टोनकिंग व

उसके साथियों ने प्रस्ताव रखा कि शरीर की जुओं की उम्र पता करो और उसकी मदद से कपड़ों के मूल का अंदाजा लगाओ। है न यह हैरतअंगेज?

सिर की जुओं व शरीर की जुओं की खास बात यह है कि यह केवल मानव शरीर में ही पाई जाती हैं। यह शरीर के बाहर रहती हैं और इनकी रहने की जगह अलग-अलग होती है। सिर की जुएं सिर की खाल में रहती हैं और वहीं खाती-पीती हैं। जबकि शरीर की जुएं अपना भोजन मानव शरीर से ग्रहण करती हैं पर रहती कपड़ों में हैं।

सिर की व शरीर की जुएं ऊपर से दिखने में एक जैसी लगती हैं, हालांकि यह सही है कि सिर की जुएं शरीर की जुओं की तुलना में छोटी होती हैं। बाकी कीड़ों की तरह इनका भी एक सिर, छाती, पेट व छह पैर होते हैं। शरीर की जुओं के आगे के दो पांव काफी बड़े होते हैं जोकि शिकार के बालों को पकड़ने में उनकी मदद करते हैं। सामान्यतया सिर की जुओं के पांव शरीर की जुओं तुलना में छोटे होते है। सबसे बढ़िया शारीरिक अंतर उनके एंटीना में पाया जाता है। सिर की जुओं के एंटीना का तीसरा जोड़ थोड़ा छोटा व चौड़ा होता है। तुलना में सिर की जुओं का रंग भी गहरा होता है।

लेकिन जुओं के शरीर का रंग इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस रंग के वातावरण में रहकर बड़ी हुई हैं। इसलिए दोनों का रंग एक जैसा नहीं होता है। इनका रंग अनुवांशिक (हेरिडिटेरी) नहीं होता। कभी-कभी तो एक ही जूं के शरीर के अलग-अलग भागों के रंग में भी थोड़ी बहुत विभिन्नता आ जाती है। सामान्यतया सिर की जुएं हल्के भूरे से लेकर स्लेटी सफेद रंग की हो सकती हैं। इनके पेट के अलग-अलग हिस्से भी ज्यादा सफाई से दिखाई

देते है। जिंदा रहने के लिए मानव शरीर की गर्मी इनके लिए आवश्यक है। नहीं तो शरीर से अलग होने के 24 घंटों में यह मर जाती हैं। कपड़ों की जुंए ज्यादा मजबूत होती हैं। खाने के बिना यह एक हफ्ते तक जीवित रह सकती है।

उम्र के साथ जुओं का रूपान्तरण सीधा-सीधा होता है। छोटी

व बड़ी जुएं एक जैसी दिखाई देती हैं। इनमें सिर्फ आकार का फर्क होता है। अब जुओं के पास पंख या मजबूत पांव तो होते नहीं कि यह उड़ सके या ऊंची छलांग लगा सकें। यह छोटे-छोटे प्राणी एक-एक बाल पकड़-पकड़ कर धीरे-धीरे रेंगते हैं। सिर की जुओं को सिर के बालों में रहना पसंद है हालांकि कभी-कभी यह शरीर के दूसरे हिस्सों की ओर भी भटक जाती हैं। लेकिन यह कालीन, कपड़ों या स्कूल बसों में नहीं रहतीं।

शरीर की जुएं कपड़ों की सिलाई के बीच में रहती हैं, जहां से वह मानव शरीर के संपर्क में आ सके। यह शरीर को तभी छूती हैं जब इन्हें खाना चाहिए होता है लेकिन ऐसा करते वक्त भी यह कपड़े को पकड़े रहती है। हालांकि कभी-कभी यह शरीर पर भी भ्रमण करने निकल पड़ती हैं। जुओं के अंड़ों को निट्स कहते हैं। यह सफेद, लंबे आकार के होते है। सिर की जुओं के अंडे सिर के करीब बालों में चिपके रहते हैं। मादा अंडों के चिपकने की प्रिय जगह कान के पास या सिर का पिछला हिस्सा होता है। शरीर की जुएं अपने अंडे कपड़ों के रेशों पर और कभी-कभार मानव शरीर के बालों पर देती हैं।

सामान्य परिस्थितियों में अंडों से जुएं 7 से 11 दिनों में निकल आती हैं। नवजात जुओं के लिए 24 घंटों के अंदर भोजन करना अनिवार्य होता है नहीं तो यह मर जाती हैं। लैंगिक रूप से परिपक्व होने के लिए इन्हें नियमित रूप से रक्तपान करना आवश्यक होता है और वयस्क होने में 10 से 12 दिन का समय लगता है।

मादा जुएं एक दिन में 6-7 अंडे व अपने 40 दिन के पूरे जीवनकाल में 50-100 अंडे देती हैं। युवा जुएं रक्तपान के बिना एक या दो दिन से ज्यादा जीवित नहीं रह सकतीं। पुरुष व मादा जुएं दोनों के ही मुंह नुकीले होते हैं ताकि वे आसानी से खाल में

छेद करके खून पी सकें। वे छेद करके मानव खून में अपना थूक मिला देती हैं जिससे कि रक्त जमने नहीं पाता और फिर ये आसानी से खून चूसती रहती हैं। अगर इन्हें तंग न किया जाए तो यह लंबे

समय तक खून चूस सकती हैं। रक्तपान के समय जुएं गहरे लाल रंग का मल विसर्जन भी कर सकती हैं।

जुओं के काटने पर अलग-अलग प्रकार की मानवीय प्रतिक्रिया हो सकती है। पहली बार काटे जाने पर लोग थोड़ी चिड़चिड़ाहट महसूस करते हैं। कुछ समय बाद कभी-कभी इससे लोगों को एलर्जी भी हो सकती है जिससे कि खाल में खुजली हो जाती है और परिणामस्वरूप त्वचा लाल हो जाती हैं।

वास्तव में कई 'आधुनिक' बीमारियां कृषि के माध्यम से जानवरों से मनुष्यों में आ गई है। चूंकि नवपाषाण मनुष्य की जनसंख्या इतनी बिखरी हुई थी कि एक दूसरे से बीमारी फैलने की संभावना कम हो जाती थी, इसलिए जुएं हमें मानवीय विरासत से ही मिली हैं।

जुओं की कहानी जुओं की जुबानी

स्टोनकिंग व उनके साथियों ने अणुविक घड़ी के माध्यम से जुंओं के डी.एन.ए. का अध्ययन किया जिससे कि प्राचीन मनुष्य के देशांतरगमन व उनके रहने की परिस्थितियों के बारे में पता चलता है। अणुविक घड़ी जेनेटिक्स विज्ञान की एक बेहतरीन विधि है जिससे वैज्ञानिक यह पता लगा सकते हैं कि एक प्रजाति दूसरी प्रजाति से कब अलग हुई। इन प्रजातियों के डी.एन.ए. की छोटी-छोटी असमानताओं से इन प्रजातियों के अलगाव का समय पता चल जाता है।

बच्चे अपना डी.एन.ए. अपने अभिभावकों से अनुवांशिक तौर पर पाते हैं। यह भी जाहिर है इस प्रक्रिया में कभी-कभी स्वभाविक छोटी-छोटी 'गलतियां' भी हो जाती हैं। और इन्हीं छोटी-छोटी गलतियों में छुपा होता है परिवर्तन व अणुविक क्रमविकास का, यानी मॉलिक्यूलर एवोल्यूशन का रहस्य। स्वाभाविक 'गलतियों' के

कारण उपजी इन्हीं विभिन्नताओं के अध्ययन से हमें पता चलता है कि कितने समय पहले यह प्रजातियां एक-दूसरे से अलग हुईं।

जिन प्रजातियों में आपसी विभिन्नताएं कम हैं उनके डी.एन.ए. में कम 'गलतियां' होती हैं और उनमें अलगाव भी नया-नया ही हुआ होता है। इसके माध्यम में हम इन प्रजातियों के पूर्वजों के समय का भी पता लगा सकते हैं। लेकिन यह तभी संभव है जब

हम डी.एन.ए. के प्रतिरुपण के समय हुई 'गलतियों की रफ्तार' का भी अंदाजा लगा सकें। इस मामले में कई और भी वैज्ञानिक बारीकियां हैं। मामला आसान नहीं है।

डी.एन.ए. का एक प्रकार होता माइटोकॉन्ड्रिया का डी.एन.ए। दूसरे डी.एन.ए. की भांति ही इसमें प्राकृतिक तौर पर परिवर्तन होता है। लेकिन यह माइटोकांड्रिया का डी.एन.ए. मां से बच्चे के शरीर में अनुवांशिक तौर पर जाता है, इसमें पिता का कोई योगदान नहीं होता। जबकि दूसरे डी.एन.ए.- यानि न्यूकिलर डी.एन.ए. में परिवर्तन के साथ-साथ पुर्ननिर्माण भी होता रहता है। इसलिए जुओं के देशांतरण व उनके क्रम विकास का अध्ययन करने वाले पुरातत्व वैज्ञानिक माइटोकांड्रिया के डी.एन.ए. का ही अध्ययन करते है। स्टोनकिंग ने भी कुछ ऐसा ही किया जब उन्होंने जुओं की उत्पत्ति व उसके द्वारा कपड़ों की उत्पत्ति के विषय में अध्ययन शुरू किया। उन्होंने भी अणुविक घड़ी की विधि का इस्तेमाल किया।

मुख्यतौर पर कपड़ों पर केंद्रित होते हुए स्टोनकिंग को लगा कि शायद यह जुएं आधुनिक मानव की उत्पत्ति पर भी प्रकाश डाल सकती हैं। यह एक सिद्धांत है कि एक जगह में डी.एन.ए. की अधिक विभिन्नता यह दर्शाता है कि यहीं इस प्रजाति की शुरुआत हुई है।

स्टोनकिंग के दल ने पाया की अफ्रीकी जुओं में सबसे ज्यादा डी.एन.ए. की विभिन्नताएं थीं। जिसका अर्थ यह हुआ कि शारीरिक जुओं और मनुष्यों की उत्पत्ति अफ्रीका में ही हुई थी और चूंकि सिर की जुओं में ज्यादा विभिन्न प्रजातियां पाई जाती है, तो इसका मतलब यह है कि सिर की जुओं की उत्पत्ति शारीरिक जुओं की तुलना में पहले हुई। अफ्रीका में पाई जाने वाली जुओं की विभिन्नता, सिर की जुओं की तुलना में शरीर की जुओं की देर से उत्पत्ति तथा पूरे विश्व

में उनक फैलाव व जनसंख्या में वृद्धि इस बात के प्रमाण हैं कि जुओं और मानव का विकास साथ-साथ हुआ।

शारीरिक जुओं की यह सब बातें मनुष्यों की उत्पत्ति की कहानी से मेल खाती है। जैसे कि मनुष्य की अफ्रीका में उत्पत्ति और फिर 50000 से 100000 वर्षों में अफ्रीका से बाहर देशांतरगमन।

इसके अलावा, अगर शारीरिक जुओं का इतिहास वस्त्रों के विकास पर प्रकाश डालता है तो इससे यह भी पता चलता है कि वस्त्र एक नई खोज हैं। इनकी उत्पत्ति तब हुई जब आधुनिक मानव ने अफ्रीका के बाहर के ठंडे प्रदेशों की ओर प्रस्थान करना शुरू कर दिया।

शरीर की जुओं का इतिहास कपड़ों के इतिहास की ओर संकेत करता है। लेकिन यह भी हो सकता है कि कपड़ों की उत्पत्ति शारीरिक जुओं की उत्पत्ति से पहले ही हो गई हो। जिसका अर्थ यह हुआ कि कपड़े शरीर की जुओं से ज्यादा पुराने हो सकते हैं। एक बार जब कोई प्रजाति जन्म ले लेती है तो उसकी बस्ती बनने और बढ़ोतरी होने में ज्यादा समय नहीं लगता। इसलिए कपड़ों का शारीरिक जुओं से पहले आने की संभावनाएं कम है।

आधुनिक मानव और प्राचीन मानव (जैसे कि नीएंडरथल) एक दूसरे से तकरीबन 250000 से 500000 वर्ष पहले अनुवांशिक रूप से अलग हुए थे। तो अगर हम कपड़ों को प्राचीन मानव से जोड़ते है तो इसका मतलब यह होगा कि कपड़े शरीर की जुओं से हजारों साल पहले ही आ गए थे। लेकिन ऐसा होने की संभावना न के बराबर है। पुरातत्विक प्रमाण भी वस्त्रों को आधुनिक मानव की खोज की ओर संकेत करते है।

सुई जैसी चीजें जोकि सिर्फ कपड़ों से ही संबंधित हैं, सिर्फ 40000 वर्ष पुरानी हैं। यह आधुनिक मानव के निवास स्थानों पर

ही पाई गई है। नीएंडरथल के निवास स्थान पर ऐसी कोई चीज नहीं मिली।

कपड़ों का प्रभाव

मशहूर लेखक मार्क ट्वेन ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि, "कपड़े ही मनुष्य को बनाते हैं। नग्न लोगों का समाज में कोई महत्व नहीं होता।" मानव वैज्ञानिकों का मानना है कि पूरी तरह से परिस्थिति के अनुरूप कपड़े पहनने वाले आधुनिक मानव आखिरी हिमयुग झेल गए जबकि नीएंडरथल यानी प्राचीन मानव उसे सहन नहीं कर पाए। 100000 वर्ष पहले यूरोप व पश्चिमी एशिया में आधुनिक मानव व प्राचीन मानव एक ही काल में रहते थे। आधुनिक मानव विपरीत परिस्थितियों के बावजूद जीवित रह गए जबकि प्राचीन मानव 25000 वर्ष पहले खत्म हो गए। आधुनिक मानव की तुलना में नीएंडरथल ज्यादा तंदुरूस्त, मांसल व कद में छोटे होते थे। यह सब कारण शरीर से निकलने वाली गर्मी को कम करते है। इसका तात्पर्य यह है कि नीएंडरथल हिमयुग के कारण होने वाले वातावरण के बदलाव की ठंड को सहन करने के लिए शारीरिक रूप से ज्यादा सक्षम थे। फिर भी आधुनिक मानव जीवित रह गए व नीएंडरथल की पूरी प्रजाति नष्ट हो गई।

इसका आखिर क्या कारण था?

आइलो व व्हीलर द्वार किए गए एक बेहतरीन अध्ययन के मुताबिक यह सब मुमकिन हुआ आधुनिक मानव के बेहतर कपड़ों की वजह से। आधुनिक मानव की तुलना में नीएंडरथल हिमयुग में और भी सीमित हो गए थे। आइलो तथा व्हीलर ने नीएंडरथल व आधुनिक मानव के रहने के स्थानों का अध्ययन किया। जिससे उन्होंने अंदाजा लगाया कि नीएंडरथल के रहने के स्थान हिमयुग में बहुत ज्यादा ठंडे हो गए होगें। उदाहरण के तौर पर, मोराविया की

कुल्ना गुफा में रहने वाले नीएंडरथल को –24 डिग्री सेल्सियस की ठंड का सामना करना पड़ा होगा। आइलो और व्हीलर ने इसका अनुमान लगाया कि इतनी ठंड सहन करने के लिए नीएंडरथल मानव को कितने बचाव की जरूरत पड़ी होगी। उन्होंने पाया कि अगर नीएंडरथल मानव जानवर की खाल के वस्त्र भी पहनते तो भी उनके लिए ऐसे वातावरण में जीवित रहना मुश्किल था। हालांकि उनके शरीर की बनावट ऐसी थी जो कि उनके शरीर से गर्मी के निकास को कम करती थी लेकिन ऐसी जगहों में रहने के लिए नीएंडरथल मानव को बहुत सारे कपड़े व रहने के लिए घर की जरुरत पड़ती।

इसलिए इसमें हैरानी की बात नहीं है कि नीएंडरथल ऐसी जगहों में रहना पसंद करते थे जहां का तापमान और जगहों की तुलना में थोड़ा ज्यादा होता था। जैसा कि आइलो व व्हीलर बताते

हैं कि 37000 से 22000 वर्ष पहले नीएंडरथल निवास स्थान का शीतकालीन तापमान -16 डिग्री सेल्सियस था। जबकि आधुनिक मानव के निवास स्थान का तापमान का दायरा 20 डिग्री सेल्सियस से -23 डिग्री सेल्सियस तक था। यह इस बात को दर्शाता है कि आधुनिक मानव अपने बेहतर कपड़ों की वजह से ज्यादा ठंडे स्थानों में भी रह सकते थे।

आधुनिक मानव का नया वंश यूरोप में 29000 से 30000 वर्ष पहले आया जिसके पास भाला, मछली पकड़ने के जाल जैसा आधुनिक सामान था। इससे उन्हें शिकार करने में काफी मदद मिलती थी। इनके पास सिले हुए फर, बुने हुए कपड़े जैसे वस्त्र भी थे। यूरोप का ठंडे वातावरण सहन कर लेने के कारण इनकी जनसंख्या बढ़ती गई।

दूसरी ओर नीएंडरथल मानव नए खून व नई तकनीक के बिना नई परिस्थितियों को सह न सके और 28000 वर्ष पहले मर गए। इससे यह साफ पता चलता है कि वस्त्रों ने आधुनिक मानव को

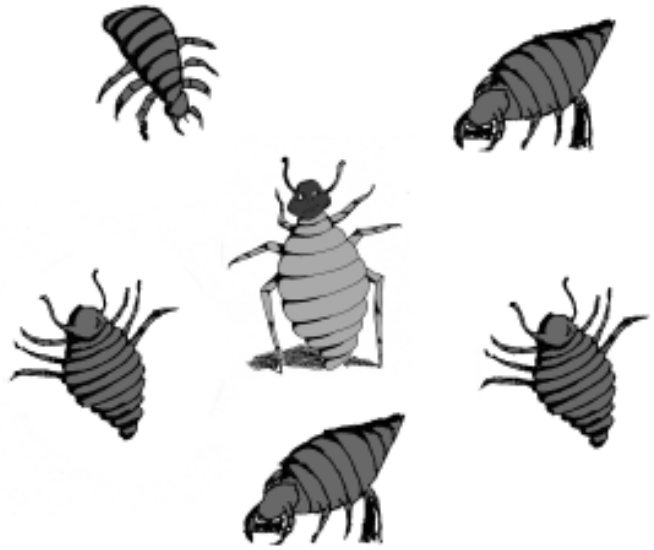

जीवित रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नीएंडरथल के निवास स्थानों में सुई जैसी कोई चीज नहीं मिली है। सुई का इस्तेमान न होने के कारण नीएंडरथल के वस्त्र उन्हें मौसमी बदलावों से बचाए रखने में ज्यादा सहायक नहीं हो पाए। तकरीबन नग्न रहने वाला तथा खराब वस्त्र पहनने वाला नीएंडरथल मानव खत्म हो गया। जबकि बेहतर व परिस्थिति अनुकूल वस्त्र पहनने वाला आधुनिक मानव इस धरती पर रह गया। बेहतर वस्त्रों के कारण ही आधुनिक मानव का अफ्रीका से बाहर जाकर विश्व के ठंडे प्रदेशों में रहना संभव हुआ। स्टोनकिंग का जुओं का अध्ययन भी इन सभी तथ्यों को सहारा देता है।

मजाक के तौर पर कहा जा सकता है कि हम हिंदुस्तानी लोग तो प्राचीन काल से ही बाल लंबे रखते आ रहे हैं। हो सकता है हमारे यहां शरीर की जुओं से ज्यादा आपको सिर की जुएं मिल जाएं। अगर नीएंडरथल मानव कम वस्त्र पहनते थे तो भारत में भी कम वस्त्र पहनने का प्रचलन रहा है।

प्राचीन भारत की मूर्तियों, शिल्पकारों की कृतियों को ही देखिए। उनमें से ज्यादातर मूर्तियां नग्न हैं। हो सकता है कुछ ने एक धोतीभर लपेट रखी हो। हां कुछ स्त्रियों की मूर्तियों ने अंग वस्त्र जरूर पहने हैं। लेकिन परंपरानुसार भगवान शिव खुद को ढकने के लिए सिर्फ हिरण की खाल का ही इस्तेमाल करते थे और बैठने के लिए शेर की खाल का।

वर्जिनिया वुल्फ ने शायद सही कहा था- "बहुत प्रमाण हैं इस बात को सच साबित करने के लिए कि हम कपड़े नहीं, बल्कि कपड़े हमें पहनते हैं। हम चाहे उन्हें बांह के आकार में, चाहे छाती के आकार में ढाल लें। लेकिन सच तो यह है कि हम कपड़ों को नहीं, बल्कि कपड़े हमारे दिल दिमाग और जुबान को अपनी पसंद के मुताबिक ढालते है।" ■